सामाजिक समझौते का सिद्धान्त

- लीविन के अनुसार, राज्य व्यक्तियों के स्वयं द्वारा निर्मित हुए आदान-प्रदान का परिणाम था जिससे व्यक्तियों ने उत्तरदायित्व के बदले विशेषाधिकार प्राप्त किये।
- महाभारत के शान्तिपर्व तथा कौटिल्य की पुस्तक अर्थशास्त्र में इस स्थिति का वर्णन मिलता है कि मत्स्यन्याय की स्थिति से त्रस्त होकर मनुष्यों ने परस्पर समझौते द्वारा राज्य की स्थापना की।
- यूनान में सोफिस्ट वर्ग ने सर्वप्रथम इस विचार का प्रतिपादन किया। इपीक्यूरियन विचारधारा वाले वर्ग तथा रोमन विचारकों द्वारा भी इसका समर्थन किया गया।
- सर्वप्रथम रिचार्ड हूकर ने वैज्ञानिक रूप में समझौते की तर्कपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की।
- इस सिद्धान्त का वैज्ञानिक और विधिवत प्रतिपादन संविदावादी विचारक हॉब्स, लॉक तथा रूसो द्वारा किया गया है।
- हॉब्स ने सन् 1651 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'लेवियाथन' में समझौता सिद्धान्त का प्रतिपादन कर निरंकुश राजतंत्र का समर्थन किया।

- हॉब्स के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी नहीं है। वह एक स्वार्थी, अहंकारी तथा आत्माभिमानी प्राणी है। वह सदैव शक्ति से ही प्रेम करता है और शक्ति प्राप्त करने का निरन्तर प्रयास करता रहता है।
- हॉब्स के शब्दों में, "प्राकृतिक अवस्था में न कोई व्यवसाय था, न कोई संस्कृति थी

Scanned By Scanner Go

Scanned By Scanner Go

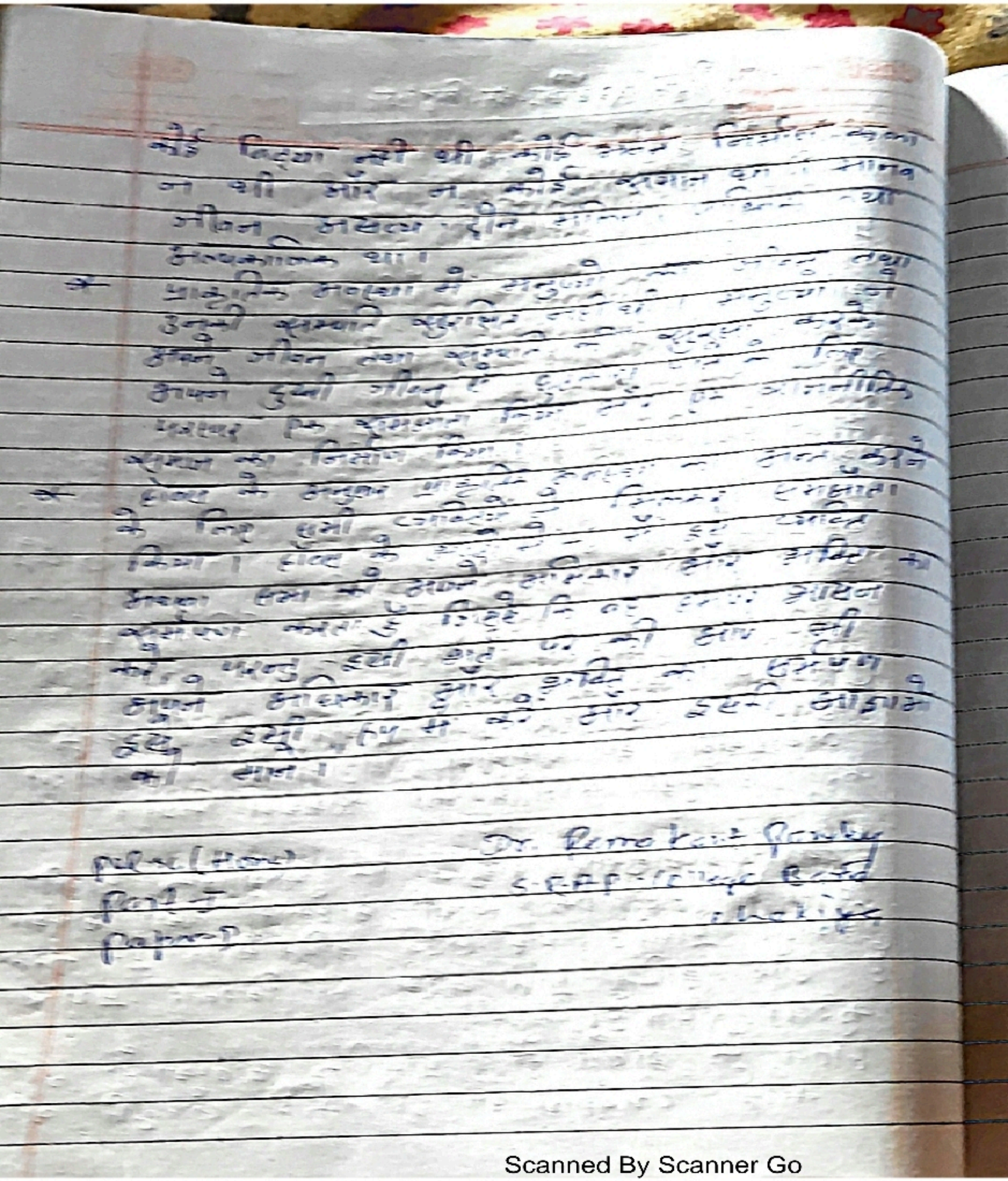

Scanned By Scanner Go

Scanned By Scanner Go